# मातृभाषा संस्कृति, नैतिकता, चिंतन, मनन, ज्ञान-विज्ञान व सृजन का आधार

रांची | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व डीएसपीएमयू के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को डीएसपीएमयू सभागार में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। निदेशक डॉ. कुमार संजय झा ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कहा कि

मातृभाषा में हमारी संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपार शक्ति है। कुलपति डॉ. तपन शांडिल्य ने कहा कि मातृभाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, नैतिकता, चिंतन, मनन, ज्ञान-विज्ञान व सृजन का आधार भी है।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

अपनी रांची

### अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर राजधानी के शिक्षण संस्थानों में हुए कार्यक्रम, साहित्यकारों ने भाषा के संरक्षण का बताया महत्व

# जनजातीय भाषाओं को लुप्त होने से बचाना होगा

**बोले रणेन्द्र**

**रांची, विशेष संवाददाता।** अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर शुक्रवार को राजधानी के शिक्षण संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय केंद्र रांची और डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि (डीएसपीएमयू) की ओर से आयोजित संगोष्ठी में बतौर वक्ता डॉ रामदयाल मुंडा आदिवासी कल्याण शोध संस्थान के पूर्व निदेशक रणेन्द्र कुमार ने कहा कि भाखा और भाषा के बीच विभाजन अंग्रेजों की विभाजनकारी नीति का परिणाम है। झारखंड की 32 जनजातियों की भाषाओं को लुप्त होने से बचाने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया कि हिंदी के राष्ट्र भाषा बनने में कई रुकावटें आईं। कहा कि संस्कृत हमें गरिमा प्रदान करती आ रही है और यह आगे भी करती रहेगी। महादेव टोप्पो ने कहा कि मातृभाषाएं स्वयं नहीं मरतीं, बल्कि मारी जाती हैं। भाषाओं का स्वरूप तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों से निर्धारित होता है। हर राष्ट्र के राष्ट्रीय प्रतीकों में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने बताया कि कुड़ुख भाषा की लिपि- तोलोंगसिकी, कंप्यूटर फ्रेंडली है और इसके लिए यूनिकोड आसानी से बनाए जा सकते हैं।

कार्यक्रम में साहित्यकार महादेव टोप्पो, डॉ जिंदर सिंह मुंडा, डॉ विनोद कुमार, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ कुमार संजय झा मौजूद थे। अध्यक्षता डीएसपीएमयू के कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने की।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय केंद्र रांची और डीएसपीएमयू की ओर से शुक्रवार को आयोजित संगोष्ठी में मौजूद डॉ रामदयाल मुंडा आदिवासी कल्याण शोध संस्थान के पूर्व निदेशक रणेन्द्र कुमार, कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य और अतिथि।

### मातृभाषा सृजन का आधार भी : डॉ तपन

डीएसपीएमयू के कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने कहा कि भारत बहुभाषिक और बहुजातीय देश है। मातृभाषा महज संचार का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिकता, चिंतन, मनन, ज्ञान-विज्ञान और सृजन का आधार भी है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने कहा कि मातृभाषा में हमारी संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपार शक्ति है।

### लिखित साहित्य का अभाव: डॉ जिंदर

डीएसपीएमयू के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के समन्वयक डॉ विनोद कुमार ने खोरठा भाषा में मातृभाषा की गरिमा पर बात की। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ जिंदर सिंह मुंडा ने कहा, मातृभाषा के संरक्षण के लिए बौद्धिकता, पठनीयता और विद्वता का सहारा लिया जाना चाहिए। क्षेत्रीय जनजातीय भाषा के कई शब्द हिंदी में सम्मिलित हो चुके हैं, पर लिखित साहित्य के अभाव में मातृभाषाएं अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं।

## आरयू के टीआरएल विभाग में मातृभाषा दिवस पर संगोष्ठी

रांची, विशेष संवाददाता। रांची विवि के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर शुक्रवार को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें नागपुरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उमेश नंद तिवारी ने कहा कि मातृभाषा को बचाने के लिए हमें अपनी संस्कृति को बचाना होगा।

खड़िया विभाग के अध्यक्ष डॉ बंधु भगत ने कहा कि भाषा अपने समाज की प्रतिबिंब होती है, अगर वह संरक्षित व सुरक्षित नहीं रहेगी तो प्रतिबिंब की कल्पना नहीं की जा सकती है।

**मातृभाषा की रक्षा का दायित्व हम सबका:** मुंडारी विभाग के अध्यक्ष डॉ मनय मुंडा ने कहा मातृभाषा की रक्षा का दायित्व हम सबका है। इसके अलावा डॉ मेरी एस सोरेंग, डॉ कुमारी शशि, डॉ गीता कुमारी सिंह, डॉ राजू नायक, डॉ दिनेश कुमार, डॉ बीरेंद्र महतो, करम सिंह मुंडा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ वीरेंद्र कुमार सोय ने किया।

### बांग्ला विभाग: बोलचाल में मातृभाषा के प्रयोग पर जोर

रांची। आरयू के स्नातकोत्तर बांग्ला विभाग में शुक्रवार को मातृभाषा दिवस पर कार्यक्रम हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ निवेदिता सेन ने अध्यक्षता करते हुए मातृभाषा के महत्व पर चर्चा की और इसके नियमित बोलचाल पर जोर दिया। डॉ प्रियरंजन लाहा, डॉ गौतम मुखर्जी शोधार्थी राजीव, पूषा, देबोज्योति ने भी मातृभाषा की महता पर बात की।

### जेएन कॉलेज: भाषा के विविध प्रयोग पर बात

रांची। जेएन कॉलेज, धुर्वा में शुक्रवार को मातृभाषा दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्या डॉ शमशुन नेहार ने कहा कि मातृभाषा प्रत्येक देशवासी में राष्ट्र प्रेम की भावना में वृद्धि करती है। तकनीक, कानून जैसे क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग होना चाहिए।

# मातृभाषा में संस्कृति को सुरक्षित रखने की शक्ति : डा . कुमार

डा . श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में शामिल अतिथि।

जागरण संवाददाता, रांची : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के संयुक्त तत्वावधान में "अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस-2025 स्मरणोत्सव" पर संगोष्ठी आयोजित की गई। क्षेत्रीय निदेशक डा. कुमार संजय झा ने कहा कि मातृभाषा में हमारी संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपार शक्ति है। वर्तमान में यह कमजोर हो रही है। पहले के समय में शादी-विवाह और पारिवारिक अवसरों पर जो पारंपरिक गीत गाए जाते थे, वे आज की पीढ़ी के लिए अनजान होते जा रहे हैं। यह संस्कृति का भी ह्रास है। मुख्य अतिथि कुलपति डा. तपन कुमार शांडिल्य ने कहा कि भारत बहुभाषिक और बहुजातीय देश है, जहां अनेकता में एकता इसकी विशेषता है। मातृभाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिकता, चिंतन, मनन, ज्ञान-विज्ञान और सृजन का आधार भी है। दिनकर ने भी राष्ट्रभाषा को भारतवर्ष के हृदय की वाणी कहा है। रणेन्द्र कुमार ने कहा कि भाखा और भाषा के बीच विभाजन अंग्रेजों की विभाजनकारी नीति का परिणाम रहा है। झारखंड की 32 जनजातियों की भाषाओं को लुप्त होने से बचाने के लिए विशेष प्रयास होने चाहिए। महादेव टोप्पो ने कहा कि मातृभाषाएं स्वयं नहीं मरतीं, मारी जाती हैं। डा. बिनोद कुमार ने मातृभाषा की गरिमा पर प्रकाश डाला। प्रो. जिंदर सिंह मुंडा ने कहा कि मातृभाषा के संरक्षण के लिए बौद्धिकता, पठनीयता और विद्वता का सहारा लिया जाना चाहिए।

# अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2025 पर भव्य अकादमिक संगोष्ठी का आयोजन

- **मातृभाषा के संरक्षण के लिए सकारात्मक आन्दोलन की आवश्यकता-डा.कुमार संजय झा**
- **अनेकता में एकता हमारी सांस्कृतिक विशेषता-डा.तपन कुमार शांडिल्य**
- **संस्कृत हमारी गरिमा का प्रतीक-रणेन्द्र कुमार**
- **राष्ट्रीय प्रतीकों में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण-महादेव टोप्पो**

**झारखंड देखो, प्रतिनिधि।**

रांची(झारखंड):इंदिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारत सरकार के स्थानीय क्षेत्रीय केन्द्र,रांची और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय,रांची के संयुक्त तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2025 के मौके पर एक दिवसीय भव्य अकादमिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार विश्वविद्यालय के सभागार में भारतीय भाषा और साहित्य की वैश्विक मान्यता और प्रतिष्ठा विषयक आयोजित संगोष्ठी में कई प्रख्यात विद्वानों और प्राध्यापकों ने मातृभाषा पर अपने अभिनव विचार रखे और इसकी महता और शक्ति को रेखांकित किया। इंदिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक डा.कुमार संजय झा ने संगोष्ठी के उद्देश्यो की विवेचना की और कहा कि मातृभाषा में हमारी संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपार क्षमता है।वर्तमान में मातृभाषा के कमजोर होने की जानकारी देते हुए निदेशक डा.कुमार संजय झा ने अगाह किया कि शादी-विवाह और पारिवारिक त्योहारों के अवसर गाए जाने वाले परमपरागत गीतों से वर्तमान पीढ़ी अनजान होती जा रही है। उन्होने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए यह भी कहा कि यह हमारी हमारी भाषा का ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक पतन का भी द्योतक है और चिन्ताजनक है। इसलिए निदेशक डा.कुमार ने मातृभाषा के संरक्षण के लिए सकारात्मक आन्दोलन की आवशयकता बतायी। अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2025 स्मरणोत्सव संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी वि वि के कुलपति डा. तपन कुमार शांडिल्य ने देश की बहुभाषिक और बहुजातीय संस्कृति का उल्लेख करते हुए कहा कि अनेकता में एकता इसकी विशेषता है।उन्होंने स्पष्ट किया कि मातृभाषा केवल संचार का ही माध्यम नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति,नैतिकता,चिंतन,मनन,ज्ञान-विज्ञान और सृजन का आधार भी है। डा.रामदयाल मुंडा ट्राइबल वेलफेयर रिसर्च इन्सटिच्यूट के पूर्व निदेशक रणेन्द्र कुमार ने अंग्रेजो की विभाजनकारी नीति आलोचना करते हुए कहा कि भाखा और भाषा के बीच विभाजन इसी नीति का परिणाम है।उन्होने प्रदेश की 32 जनजातियों की भाषाओं को लुप्त होने से बचाने के लिए विशेष प्रयास किये जाने की आवशयकता पर जोर दिया।उन्होंने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनने में आई रूकावटों का उल्लेख किया और कहा कि संस्कृत हमारी गरिमा का प्रतीक है। प्रदेश के प्रख्यात साहित्यकार महादेव टोप्पो ने कहा कि मातृभाषाएं स्वयं नही मरती ,बल्कि मारी जाती हैं। साहित्य पुरस्कार से सम्मानित श्री टोप्पो ने कहा कि भाषाओं का स्वरूप तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों से निर्धारित होता है। साहित्यकार टोप्पो के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र के राष्ट्रीय प्रतीकों में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनके अनुसार कुडुख भाषा कि लिपि (तोलोंगसिकी) कंप्यूटर फ्रेंडली है और इसके लिए युनिकोड बनाना आसान है। मौके पर डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के समन्वयक डा. बिनोद कुमार ने खोरठा भाषा में मातृभाषा की गरिमा को रेखांकित किया और इसकी महता की विवेचना की । उन्होने कहा कि ब्राजभाषा में सूरदास की कविता मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो से मैया शब्द निकाल दिया जाय तो वात्सलय रस प्रभावित हो जायेगा।डा.बिनोद कुमार के अनुसार यह मातृभाषा की महता को सिद्ध करता है। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी वि वि में स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा.जिंदर सिंह मुंडा ने मातृभाषा के संरक्षण के लिए बौद्धिकता,पठनीयता और विद्वता का सहारा लिये जाने की आवशयकता बतायी और यह बताया कि क्षेत्रीय जनजातीय भाषा के कई शब्द हिन्दी में सम्मिलित हो चुके हैं पर लिखित साहित्य के अभाव में मातृभाषाओं का अस्तित्व संकट में है। ज्ञातव्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को भाषाई विविधता और मातृभाषा के महत्व को रेखांकित करने के लिए मनाया जाता है इसकी शुरुआत यूनेस्कों ने वर्ष 1999 मे की थी और वर्ष 2020 से इसे वैश्विक स्तर पर मनाया जनने लगा। बताते चले कि यह दिवस वर्ष 1952 के बांग्लादेशी भाषा आन्दोलन की स्मृति को समर्पित है जिसमें कई छात्रों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।वर्ष 2025 में इसकी रजत जयंती के मौके पर आयोजित कथित संगोष्ठी का उद्देश्य भाषाई विविधता को संरक्षित करना और शिक्षा में मातृभाषा के उपयोग को प्रोत्साहन देना है। संगोष्ठी का संचालन करते हुए स्थानीय संत जेवियर कालेज में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डा. कमल कुमार बोस ने हिन्दी भाषा के महत्व और राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। डा. बोस ने बताया कि राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रभाषा,राज्यभाषा और मातृभाषा सभी का योगदान रहा है पर हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में भारत को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है। संगोष्ठी में वि वि हिन्दी विभाग के कई विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस संगोष्ठी में विभिन्न विभागों के कई शिक्षक,शोधार्थी,छात्र और मातृभाषा प्रेमी उपस्थित थे।